

'समाज कल्याण' अवधारणा से आप क्या समझते हैं ? क्या इसे मापा जा सकता है?

Ans. सामाजिक कल्याण से अभिप्राय समाज के सभी सदस्यों द्वारा प्राप्त किये जाने वाले संतोष के कुल योग से होता है।

मैलबिन रेडर (Malvin Reder) के अनुसार, "कल्याणकारी अर्थशास्त्र आर्थिक विज्ञान की वह शाखा है जो आर्थिक नीतियों की उपयुक्तता के मानदण्डों की स्थापना तथा उन्हें लागू करने का प्रयत्न करती है। "

सिटोवस्की (Scitovsky) के अनुसार, "कल्याणवादी अर्थशास्त्र आर्थिक सिद्धांत के समान अंग का वह भाग है जो प्रमुख रूप से नीति से ही संबंधित होता है। " इस संबंध में प्रो. वाटसन (Watson) का कहना है कि आदर्शात्मक कीमत सिद्धांत का दूसरा नाम ही कल्याणवादी अर्थशास्त्र है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी सदस्यों का उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण, आदि सभी क्षेत्रों में आर्थिक कल्याण का अध्ययन करना होता है तथा ऐसी नीतियों का विश्लेषण करना होता है जो आर्थिक कल्याण की वृद्धि में सहायक होती है।

जहाँ तक सामाजिक कल्याण की माप का प्रश्न है, यह एक दुष्कर कार्य है। सामाजिक कल्याण से हमारा अभिप्राय समाज के सभी सदस्यों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले संतोष के कुल योग से होता है। स्पष्ट है कि समाज को एक सम्पूर्ण अंग (Organic Whole) के रूप में नहीं माना जा सकता है और न ही एक व्यक्ति के समान इसका अपना कोई मानस होता है। व्यक्तिगत चुनाव तो व्यक्तिगत कल्याण को दिखाता है, लेकिन सामाजिक चुनाव सामाजिक कल्याण को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता है क्योंकि सामाजिक चुनाव | सर्वसम्मति (Unanimous) नहीं होता है। इस प्रकार सामाजिक कल्याण की परिमाणात्मक माप सम्भव नहीं है। सामाजिक कल्याण की गुणात्मक माप के लिए डॉ. ग्राफ (Graff) ने | सामाजिक कल्याण के तीन गुणात्मक विचारों (Three Qualitative Concept of Social Welfare) का उल्लेख किया है

1. सामाजिक कल्याण की पैतृक धारणा (Paternalist Concept of Social Welfare) प्रथम विचार को सामाजिक कल्याण की पैतृक धारणा (Paternalist Concept) की संज्ञा दी गई है, जो किसी व्यक्ति के कल्याण की नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक कल्याण | के संबंध में लिए गए निर्णय की व्याख्या करती है। अन्य शब्दों में, इसके अन्तर्गत व्यक्तियों के विचारों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। सारा महत्व पैतृक सत्ता अथवा किसी अधिनायक के विचारों को दिया जाता है।

2. सामाजिक कल्याण की परेटो की धारणा (Pareto's Concept of Social Welfare) परेटो द्वारा प्रतिपादित इस धारणा के अनुसार सामाजिक कल्याण की मात्रा

समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों के सामाजिक कल्याण पर निर्भर करती है। यह निश्चित है कि समाज के किसी एक व्यक्ति का कल्याण बढ़ने पर कुल सामाजिक कल्याण की मात्रा में वृद्धि होगी, बतरों किसी अन्य व्यक्ति के कल्याण में कमी न होती हो।

3. सामाजिक कल्याण की वर्गसन की धारणा (Bergson's Concept of Social Welfare)- सामाजिक कल्याण की तीसरी धारणा का प्रतिपादन अब्राहम वर्गसन (Abraham Bergson) ने किया है। इनके अनुसार आर्थिक संगठन में होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप समाज के कुछ सदस्यों की कल्याण स्थिति श्रेष्ठतम (Better off) तथा कुछ की हीनतर (Worse off) हो जाती है। फलस्वरूप इस प्रक्रिया में समाज के विभिन्न सदस्यों द्वारा प्राप्त उपयोगिता की अन्तर्व्यक्तिक (inter-personal) तुलना की जाती है, जिसे प्रो. वर्गसन से अपने सामाजिक कल्याण फलन (Social Welfare Function) की क्रिया द्वारा सम्पन्न किया है। यह क्रिया समाज के विभिन्न व्यक्तियों के उपयोगिता फलन (Utility function) को प्रकट करती है।

सामाजिक कल्याण के अध्ययन में पैतृक अथवा अधिनायकी धारणा को सामान्यतः स्वीकार नहीं किया गया है। अनेक अर्थशास्त्रियों का यह निश्चित मत है कि व्यावहारिक दृष्टि से कल्याण- अर्थशास्त्र को नीतिशास्त्र (Ethics) से अलग रखना सम्भव नहीं है। बर्गसन, सैम्युअलसन, लिटन आदि अर्थशास्त्री इसी मत के पोषक

हैं। कल्याणवादी अर्थशास्त्र अपने विषय को मूल्यगत निर्णयों (Value-Judgement) से अलग नहीं रख सकता है। **क्या सामाजिक कल्याण मापनीय है?**

(Is social welfare Measureable ?)

कल्याण अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उपस्थित होता कि क्या सामाजिक कल्याण की भौतिक माप (Physical Measurement) सम्भव है ? सामान्यतः 'अधिक' अथवा 'कम' जैसे शब्दों का प्रयोग करके हम सामाजिक कल्याण की मात्रा को एक दिए हुए समय में, पहले की तुलना में बढ़ा हुआ अथवा घटा हुआ ब हैं। प्रश्न यह है कि क्या इसकी कोई संख्यात्मक माप हो सकती है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि अर्थशास्त्र में उपयोगिता को मापा जा सकता है अथवा नहीं, क्योंकि सामाजिक कल्याण की मात्रा समाज की कुल उपयोगिता की मात्रा पर निर्भर करती है। अन्य बातों के समान रहने पर यदि किसी सरकारी आर्थिक नीति के फलस्वरूप समाज की कुल उपयोगिता में वृद्धि कमी होती है तो उसके कुल कल्याण में भी क्रमशः उसी प्रकार, वृद्धि अथवा कमी होगी। अतः सामाजिक कल्याण की परिमाणात्मक माप के लिए यह आवश्यक है कि उपयोगिता की माप होनी चाहिए। उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक विचार है जिसका अनुभव तो किया जा सकता है? किन्तु उसकी मात्रात्मक माप नहीं की जा सकती।

हिक्स एवं ऐलन अर्थशास्त्रियों ने उपयोगिता की क्रमवाचक रूप (Ordinal Form) में माप को स्पष्ट किया है जिसके अनुसार उपभोक्ता को प्राप्त उपयोगिताओं में अनुभव के आधार पर संतुष्टि क्रम देकर बताया जा सकता है कि किस वस्तु से अधिक संतुष्टि मिली तथा किस से कम। यह एक वस्तुपरक कसौटी (Objective Criteria) है, लेकिन यह कसौटी व्यक्तिगत कल्याण की माप में सहायक है, सामाजिक कल्याण की माप में नहीं।